www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-3* *March 2025***

भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल परंपरा की प्रासंगिकता और वर्तमान शिक्षा में इसका पुनरुत्थान

डॉ0 राकेश कुमार सिंह

एसोसिएट प्रोफ़ेसर (एम.एड.), मगध कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गया, बिहार

सारांश

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। इसमें गुरुकुल परंपरा विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है, जिसने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि जीवन मूल्य और आचार–विचार पर आधारित एक समग्र जीवन पद्धति के रूप में विकसित किया। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक और शिष्य के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित होते थे, जहां व्यक्तिगत विकास, नैतिकता, अनुशासन और जीवनोपयोगी शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती थी। आधुनिक समय में जब वैश्विक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की गिरावट, शिक्षा में व्यावसायीकरण और व्यक्तित्व विकास की कमी देखने को मिलती है, तब गुरुकुल परंपरा की प्रासंगिकता पुनः उभर कर सामने आती है। आज की शिक्षा प्रणाली में केवल औपचारिक ज्ञान और परीक्षा केंद्रित शिक्षा दी जा रही है, जो छात्र के समग्र व्यक्तित्व निर्माण में अपेक्षित भूमिका नहीं निभा पा रही है। इसके विपरीत गुरुकुल परंपरा में जीवन कौशल, आध्यात्मिक विकास, प्रकृति से सामंजस्य और नैतिक शिक्षा को विशेष स्थान दिया जाता था। इस संदर्भ में वर्तमान शिक्षा में गुरुकुल परंपरा के मूल्यों का पुनरुत्थान आवश्यक प्रतीत होता है। भारत सरकार और विभिन्न निजी संस्थान आज वैदिक गुरुकुल, वेद पाठशालाओं और आधुनिक गुरुकुल विद्यालयों की स्थापना के माध्यम से इस परंपरा को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं। शिक्षा में आचार्य–शिष्य परंपरा, नैतिक शिक्षा, योग और ध्यान जैसी विधाओं का समावेश करके विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास को संतुलित किया जा सकता है। गुरुकुल प्रणाली का पुनरुत्थान नई शिक्षा नीति 2020 में भी दिखाई देता है, जिसमें भारतीय संस्कृति, जीवन कौशल और नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की बात कही गई है। यह प्रणाली वर्तमान में एक संतुलित, मूल्यनिष्ठ और व्यवहारिक शिक्षा व्यवस्था के रूप में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का पूरक बन सकती है। अतः गुरुकुल परंपरा की पुनर्स्थापना से शिक्षा को पुनः मानवता, समाज और संस्कृति के अनुरूप बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द– गुरुकुल परंपरा, भारतीय शिक्षा प्रणाली, नैतिक शिक्षा, समग्र विकास,, योग और ध्यान, संस्कृति, शिष्य–आचार्य संबंध।

परिचय–

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और जीवन मूल्यों से परिपूर्ण रहा है। इसमें शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह जीवन शैली, आचार–विचार, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का भी आधार थी। इस संदर्भ में गुरुकुल प्रणाली ने शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रभावशाली और आदर्श मॉडल प्रस्तुत किया था। वर्तमान समय में, जब शिक्षा प्रणाली में औद्योगिकीकरण और व्यवसायीकरण का प्रभाव बढ़ रहा है, तब यह विचारणीय हो जाता है कि गुरुकुल परंपरा की शिक्षण पद्धति को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कैसे पुनर्स्थापित किया जाए और इसके मूल्यों को कैसे आत्मसात किया जाए। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इसी

संदर्भ में गुरुकुल प्रणाली की ऐतिहासिक प्रासंगिकता और आधुनिक शिक्षा में इसके पुनरुत्थान की आवश्यकता तथा संभावनाओं का विश्लेषण करना है।यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि गुरुकुल प्रणाली केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह एक समग्र शिक्षा प्रणाली थी, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर समान रूप से बल दिया जाता था। इस शोध में यह भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है कि कैसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, अनुशासन, पर्यावरण प्रेम, मानवीय मूल्य और गुरु–शिष्य संबंधों की पुनर्प्रतिष्ठा की जा सकती है। वर्तमान समय में जब शिक्षा केवल आर्थिक प्रगति और नौकरी प्राप्ति का माध्यम बन गई है, तब यह आवश्यक हो गया है कि हम प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा पद्धति से प्रेरणा लेकर शिक्षा को पुनः मानव केंद्रित बनाएं। यह शोध आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक नैतिक, संस्कारित और मूल्यनिष्ठ बनाने के लिए एक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के साथ–साथ वैश्विक शिक्षा प्रणाली में भारतीय दृष्टिकोण को पुनर्स्थापित किया जा सकता है।

गुरुकुल परंपरा का उद्भव वैदिक काल में हुआ था। इस प्रणाली में विद्यार्थी गुरु के आश्रम में निवास करते हुए शिक्षा ग्रहण करते थे। शिक्षा जीवन के समग्र विकास का साधन मानी जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं था, बल्कि शिष्य के चरित्र निर्माण, समाज सेवा और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने पर भी बल दिया जाता था। गुरुकुलों में वेद, वेदांग, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, अर्थशास्त्र, युद्धकला, संगीत एवं कला का शिक्षण होता था। शिक्षा निःशुल्क होती थी और गुरु–दक्षिणा के माध्यम से सामाजिक सहयोग सुनिश्चित किया जाता था। गुरु और शिष्य के बीच घनिष्ठ संबंध थे और शिक्षा व्यक्तिगत ध्यान, अनुशासन और संयम से युक्त होती थी। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा थी और यह प्रणाली स्वतंत्र, समावेशी और स्वावलंबी समाज की रचना में सहायक थी। समय के साथ–साथ मुस्लिम आक्रांताओं और ब्रिटिश शासन के प्रभाव में यह प्रणाली लुप्त होती चली गई और औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली ने स्थान ले लिया। वर्तमान में इस परंपरा के पुनरुद्धार का प्रयास भारत सरकार की नई शिक्षा नीति 2020 में परिलक्षित होता है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, आयुर्वेद और जीवन मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाया गया है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का उद्भव और विकास

भारतीय शिक्षा परंपरा में गुरुकुल प्रणाली का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह शिक्षा प्रणाली वैदिक काल में विकसित हुई और भारतीय समाज में ज्ञान, नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक के रूप में स्थापित हुई। गुरुकुल प्रणाली केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह संपूर्ण जीवन पद्धति का अंग थी। इसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं था, बल्कि जीवन के विविध पक्षों में संतुलन स्थापित करना, चरित्र निर्माण और समाजसेवा की भावना विकसित करना भी था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आरंभ वैदिक काल में माना जाता है। यह वह युग था जब समाज की संरचना चार आश्रमोंक्ृ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासक्ृ में विभक्त थी। ब्रह्मचर्य आश्रम में शिष्य गुरुकुल में निवास करते हुए शिक्षा प्राप्त करता था। गुरु के आश्रम में रहकर शिष्य वेद, वेदांग, आयुर्वेद, धनुर्वेद, संगीत, गणित, खगोलशास्त्र, व्याकरण और नीति शास्त्र का अध्ययन करते थे। शिक्षा का माध्यम प्रायः संस्कृत भाषा होती थी और गुरु शिष्य को व्यक्तिगत रूप से शिक्षा प्रदान करता था। वैदिक गुरुकुलों में छात्रों को कठोर अनुशासन, संयम और सेवा का पालन करना होता था। शिक्षा का परिवेश प्राकृतिक वातावरण में होता था, जिससे विद्यार्थियों का शारीरिक और मानसिक विकास सम्यक रूप से होता था।

प्राचीन भारत में अनेक प्रसिद्ध गुरुकुल और शिक्षण संस्थान स्थापित हुए जिन्होंने विश्व पटल पर भारत को ज्ञान की भूमि के रूप में प्रतिष्ठित किया। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी और उदंतपुरी जैसे विश्वविद्यालयों ने वैश्विक स्तर पर विद्या के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाई। तक्षशिला विश्वविद्यालय में चिकित्सा, खगोलशास्त्र, सैन्य विज्ञान, और विधि शास्त्र पढ़ाए जाते थे। नालंदा विश्वविद्यालय बौद्ध दर्शन, व्याकरण, तर्कशास्त्र और चिकित्सा विज्ञान का प्रमुख केंद्र था। इन गुरुकुलों में अध्ययन के लिए देश–विदेश से विद्यार्थी आते थे। इन शिक्षण संस्थानों ने भारतीय शिक्षा को वैज्ञानिक, व्यावहारिक और वैश्विक दृष्टिकोण से समृद्ध किया। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि शिष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना था। इस प्रणाली का मूल उद्देश्य व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर करना था। गुरुकुल शिक्षा का मूल सिद्धांत गुरु और शिष्य के मध्य विश्वास और अनुशासन पर आधारित था। इसमें

विद्या को आत्मसात करने की प्रक्रिया जीवन अनुभवों के साथ जुड़ी होती थी। शिक्षा को व्यापार या व्यवसाय के रूप में नहीं देखा जाता था, बल्कि समाज सेवा और आत्मविकास का साधन माना जाता था। जीवनोपयोगी शिक्षाएं जैसे चरित्र निर्माण, सत्य बोलना, संयम और सेवा भावना इस प्रणाली के आधार स्तंभ थे।

प्राचीन गुरुकुल प्रणाली और वर्तमान औपचारिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रहा है। प्राचीन काल में स्थापित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज में ज्ञान के प्रसार, नैतिकता, तथा संस्कारों की नींव रखी। वहीं वर्तमान औपचारिक शिक्षा प्रणाली औपनिवेशिक प्रभाव से प्रेरित होकर आधुनिक विज्ञान, तकनीक और वैश्विक मानकों पर आधारित है। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा गुरु और शिष्य के घनिष्ठ संबंध पर आधारित थी। यह प्रणाली व्यक्तिगत ध्यान, मौखिक परंपरा और अनुभव आधारित शिक्षण विधि को अपनाती थी। विद्यार्थी प्राकृतिक वातावरण में रहकर व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरुकुलों में गुरु की जीवन शैली ही विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का माध्यम होती थी। शिक्षण विधि संवादात्मक, अनुकरणात्मक और सहजीवी थी। इसके विपरीत वर्तमान औपचारिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से कक्षा आधारित है। इसमें शिक्षण विधियाँ पुस्तकों, व्याख्यान, डिजिटल उपकरणों और तकनीक पर केंद्रित होती हैं। शिक्षक एक पाठ्यक्रम आधारित ढांचे के अंतर्गत पूर्व निर्धारित पाठ योजनाओं के माध्यम से शिक्षा देते हैं। यहाँ शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान का संप्रेषण है, जबकि व्यवहारिक पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर है।

गुरुकुल प्रणाली में पाठ्यक्रम व्यापक था, जिसमें वेद, वेदांग, आयुर्वेद, धनुर्वेद, राजनीति, अर्थशास्त्र, संगीत और योग जैसे विषय शामिल थे। शिक्षा का उद्देश्य शिष्य के समग्र विकास को सुनिश्चित करना था। पाठ्यक्रम को लचीला और जीवनोपयोगी बनाया गया था, जो शिष्य की क्षमता और समाज की आवश्यकता के अनुसार अनुकूलित होता था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम औपचारिक और निश्चित होता है। यह विशेष रूप से विषय आधारित और परीक्षा उन्मुख होता है। विज्ञान, गणित, भाषा और सामाजिक अध्ययन के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा पर बल दिया जाता है। हालांकि नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल जैसी विषय–वस्तु सीमित रूप में ही शामिल की जाती है।

गुरुकुल प्रणाली में परीक्षा की औपचारिक व्यवस्था नहीं थी। शिष्य के आचरण, व्यवहार, ज्ञानार्जन और गुरु की संतुष्टि ही उसकी योग्यता का निर्धारण करती थी। गुरु द्वारा लगातार मूल्यांकन होता था और शिष्य की प्रगति गुरु के व्यक्तिगत निरीक्षण पर आधारित होती थी। आधुनिक औपचारिक शिक्षा प्रणाली में लिखित, मौखिक और प्रायोगिक परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। परीक्षा एक नियत समय में होती है और परिणाम आधारित मूल्यांकन प्रणाली पर केंद्रित होती है। अंक और ग्रेड सफलता का मानक बन चुके हैं। इस प्रणाली में अक्सर रटंत विद्या और प्रतियोगिता का बोलबाला देखा जाता है।

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षक को श्आचार्यश कहा जाता था, जिसका अर्थ होता था आचरण से शिक्षा देना। गुरु समाज में उच्च आदर्श स्थापित करता था और शिष्य का जीवन निर्माण गुरु की व्यक्तिगत जिम्मेदारी होती थी। शिक्षक का स्थान अत्यंत सम्माननीय और पूज्य होता था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका एक पेशेवर की तरह होती है, जो कक्षा में शिक्षा देता है और निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार जिम्मेदार होता है। यद्यपि आज भी शिक्षक को आदर्श और मार्गदर्शक माना जाता है, परंतु समाज में उनका स्थान और प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित हो गया है। शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध औपचारिक हो गए हैं, जिससे शिक्षा में आत्मीयता की कमी देखी जाती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल परंपरा की प्रासंगिकता

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास गवाह रहा है कि गुरुकुल परंपरा ने समाज में नैतिकता, संस्कार और समग्र विकास की नींव रखी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली, जो मुख्यतः औपनिवेशिक प्रभाव और आर्थिक प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित है, उसमें मानवीय मूल्यों, नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है। ऐसी स्थिति में गुरुकुल परंपरा का पुनरुत्थान न केवल भारतीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के लिए आवश्यक है, बल्कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, अनुशासन और समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए भी अनिवार्य बन गया है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना या आर्थिक विकास करना रह गया है। इससे शिक्षा में नैतिक और मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ है। समाज में बढ़ती हिंसा,

भ्रष्टाचार, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानताएं इस मूल्यहीन शिक्षा प्रणाली के परिणाम हैं। गुरुकुल परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं था, बल्कि जीवन मूल्यों की स्थापना और चरित्र निर्माण भी था। वैदिक युग की शिक्षा प्रणाली में सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, संयम और सेवा जैसे मूल्यों को जीवन का आधार बनाया जाता था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों की पुनः स्थापना आवश्यक है, जिससे विद्यार्थियों का चारित्रिक उत्थान संभव।

गुरुकुल प्रणाली में गुरु–शिष्य संबंध एक आत्मीय और आध्यात्मिक बंधन पर आधारित था। गुरु न केवल ज्ञान का दाता होता था, बल्कि वह शिष्य का मार्गदर्शक, संरक्षक और प्रेरक भी होता था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच औपचारिकता और दूरी बढ़ती जा रही है। यह संबंध अब केवल ज्ञान के आदान–प्रदान तक सीमित रह गया है। ऐसे में गुरु–शिष्य संबंध की पुनर्रचना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा में भावनात्मक जुड़ाव और व्यक्तिगत मार्गदर्शन को पुनः स्थापित करना, शिष्य के समग्र विकास में सहायक हो सकता है। गुरुकुल परंपरा की इस विशेषता को अपनाकर शिक्षकों की भूमिका को केवल विषय विशेषज्ञ तक सीमित न रखकर जीवन निर्माणकर्ता के रूप में स्थापित किया जा सकता है। प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर बल देती थी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी का मूल्यांकन केवल शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर होता है, जिससे उसके अन्य गुणों की उपेक्षा होती है। गुरुकुल प्रणाली में योग, ध्यान, संगीत, कला, खेल, आयुर्वेद तथा विभिन्न जीवनोपयोगी कौशलों का शिक्षण होता था, जिससे विद्यार्थी बहुआयामी विकास प्राप्त करते थे। वर्तमान शिक्षा में इस समग्र दृष्टिकोण को अपनाकर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को संतुलित और परिपक्व बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से समाज में जिम्मेदार नागरिक, कुशल नेतृत्वकर्ता और नैतिक मूल्यों से युक्त मानव संसाधन तैयार करना संभव होगा।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुत्थान की संभावनाएं और चुनौतियां

भारत की प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली केवल शिक्षा का एक माध्यम नहीं थी, बल्कि यह जीवन शैली और संस्कार निर्माण का केंद्र थी। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जहाँ शिक्षा प्रणाली अधिक व्यावसायिक और प्रतियोगी होती जा रही है, गुरुकुल परंपरा का पुनरुत्थान एक आवश्यक एवं सार्थक पहल के रूप में देखा जा रहा है। यह प्रणाली व्यक्ति के समग्र विकास पर बल देती है। हालांकि इसके पुनरुत्थान की राह में अनेक संभावनाएं हैं, किंतु इससे जुड़ी कई सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी चुनौतियां भी विद्यमान हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुत्थान में सबसे बड़ी सामाजिक चुनौती आधुनिक जीवन शैली और सोच को लेकर है। आज के माता–पिता और विद्यार्थी पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों की उपयोगिता को लेकर आशंकित हैं। अधिकांश लोग गुरुकुल प्रणाली को केवल धार्मिक या परंपरागत शिक्षा तक सीमित मानते हैं। इसके अतिरिक्त, आर्थिक दृष्टि से भी गुरुकुलों के संचालन में कठिनाइयां हैं। आधुनिक स्कूलों और विश्वविद्यालयों की तुलना में गुरुकुलों में निवेश कम होता है, जिससे संसाधनों की कमी बनी रहती है। तकनीकी चुनौतियों में, डिजिटल प्लेटफार्म और स्मार्ट शिक्षण तकनीकों को गुरुकुल प्रणाली में समाहित करना अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है। इसके अलावा, योग्य गुरुजनों की कमी और उनकी पारिश्रमिक नीति भी एक प्रमुख समस्या है।

भारत सरकार की नीतियां और शैक्षिक सुधार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने की दिशा में सहायक हो सकते हैं। सरकार ने शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देने की बात कही है। गुरुकुल परंपरा के सिद्धांत, जैसे गुरु–शिष्य परंपरा, योग, आयुर्वेद, और संस्कृत शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। सरकारी अनुदान और गैर–सरकारी संगठनों की भागीदारी भी इन गुरुकुलों के आर्थिक आधार को मजबूत कर सकती है। वर्तमान समय में कुछ राज्यों में पारंपरिक गुरुकुलों को पुनर्स्थापित करने और आधुनिक तकनीक से युक्त करने के प्रयास हो रहे हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को पुनः शिक्षा का हिस्सा बनाने का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। नीति में 'भारतीय ज्ञान परंपरा' को बढ़ावा देने की बात कही गई है, जिसमें योग, आयुर्वेद, संस्कृत और वेदों की शिक्षा का समावेश किया गया है। 'होलिस्टिक एजुकेशन' की अवधारणा, जो गुरुकुल प्रणाली का मूल आधार रही है, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रमुखता से सामने आई है। इस नीति के तहत शिक्षकों को गुरु की भूमिका में पुनः स्थापित करने, वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देने और स्थानीय भाषाओं में शिक्षा देने पर बल दिया गया है। इससे गुरुकुल परंपरा को आधुनिक शिक्षा में पुनः स्थापित करने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुत्थान भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनः मूल्य आधारित, नैतिक और समग्र शिक्षा पद्धति की ओर

अग्रसर कर सकता है। हालांकि, इसके लिए व्यापक सामाजिक जागरूकता, आर्थिक निवेश, तकनीकी समन्वय और नीतिगत समर्थन की आवश्यकता है।

भारतीय शिक्षा में गुरुकुल परंपरा के पुनर्जीवन हेतु सुझाव

भारत की गुरुकुल परंपरा शिक्षा का ऐसा स्वरूप रही है, जिसमें विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता था। यह परंपरा केवल ज्ञान के हस्तांतरण तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन मूल्यों, नैतिक आदर्शों, और व्यवहारिक कौशलों को विकसित करने वाली थी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली, जो मुख्यतः परीक्षा–केन्द्रित और रोजगार उन्मुख है, उसमें गुरुकुल परंपरा के तत्वों का पुनर्स्थापन आवश्यक हो गया है। इसके लिए कुछ व्यावहारिक और दूरदर्शी सुझावों पर ध्यान देना आवश्यक है, जिससे भारतीय शिक्षा को पुनः उसकी मौलिक जड़ों से जोड़ा जा सके। वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम में गुरुकुल प्रणाली के मूलभूत तत्वों का समावेश शिक्षा को अधिक प्रभावी बना सकता है। जैसे वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति से संबंधित विषयों को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए। इसके साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर करते हुए विद्यार्थियों में शोध और नवाचार की भावना को भी बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। शिक्षा के इन आयामों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ना समय की मांग है।

गुरुकुल परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग नैतिक और मूल्यपरक शिक्षा रही है। वर्तमान समाज में नैतिकता के ह्रास को देखते हुए इसे अनिवार्य बनाना नितांत आवश्यक हो गया है। विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, अनुशासन, करुणा, और सेवा जैसे मूल्यों की शिक्षा देना चाहिए। यह शिक्षा केवल सैद्धांतिक न होकर व्यवहारिक अनुभवों और जीवन दृष्टांतों के माध्यम से दी जानी चाहिए। नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में एक स्वतंत्र विषय के रूप में सम्मिलित करना और इसके आकलन की प्रणाली विकसित करना आवश्यक है। गुरु–शिष्य परंपरा भारतीय शिक्षा की आत्मा रही है। इस परंपरा में गुरु केवल शिक्षक नहीं होता, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिष्य का मार्गदर्शक, संरक्षक और प्रेरक होता है। इस परंपरा को पुनः सशक्त करने हेतु शिक्षक–शिष्य संबंध को केवल औपचारिक न रखकर अधिक आत्मीय और संवादात्मक बनाया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी इस दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है। शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि चरित्र निर्माणकर्ता और नैतिक आदर्श के रूप में तैयार करने की आवश्यकता है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिक प्रशिक्षण और कौशल विकास को विशेष स्थान दिया जाता था। छात्रों को कृषि, शिल्पकला, युद्धकला, संगीत, नृत्य, आयुर्वेद और योग जैसे व्यवहारिक विषयों में निपुण बनाया जाता था। आधुनिक शिक्षा में भी ऐसे कौशल आधारित कार्यक्रमों को अनिवार्य करना चाहिए। इसके लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण, उद्यमिता विकास, डिजिटल कौशल और जीवन प्रबंधन से जुड़े पाठ्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए। इससे न केवल आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहयोग मिलेगा, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे। भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल परंपरा का पुनर्जीवन शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुखी नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना से युक्त बनाने में सहायक होगा। इसके लिए पाठ्यक्रम में बदलाव, नैतिक शिक्षा का समावेश, गुरु–शिष्य परंपरा का पुनः सुदृढ़ीकरण और कौशल आधारित शिक्षा की पुनर्स्थापना अत्यंत आवश्यक है। यदि इन सुझावों को योजनाबद्ध ढंग से लागू किया जाए, तो भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व पटल पर अपनी पहचान पुनः स्थापित कर सकेगी।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल परंपरा का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह प्रणाली केवल शैक्षणिक विकास तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह मानव जीवन के समग्र विकास को केंद्र में रखती थी। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली जिन चुनौतियों से गुजर रही है, उनके समाधान के लिए गुरुकुल परंपरा एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। भविष्य में गुरुकुल परंपरा के विभिन्न आयामों पर और अधिक गहन शोध की आवश्यकता है। विशेषकर, यह अध्ययन आवश्यक है कि किस प्रकार गुरुकुल की शिक्षण पद्धतियों को आधुनिक तकनीकी माध्यमों से जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक शिक्षा, और जीवन कौशल विकास में गुरुकुल प्रणाली की भूमिका पर अधिक वैज्ञानिक और तुलनात्मक अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। भविष्य में शोध के लिए यह भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र होगा कि गुरुकुल आधारित शिक्षा प्रणाली

को ग्रामीण और शहरी शिक्षा ढांचे में किस प्रकार एकीकृत किया जा सकता है। नीति निर्माण के स्तर पर भी इस दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, जिससे गुरुकुल परंपरा केवल प्रयोगशाला या शोध पत्रों तक सीमित न रहकर समाज में व्यावहारिक रूप से पुनः स्थापित हो सके। गुरुकुल परंपरा भारतीय शिक्षा प्रणाली में उस मूल्य आधारित दृष्टिकोण का पुनर्स्मरण कराती है, जिसमें शिक्षा केवल आजीविका का साधन न होकर जीवन निर्माण का माध्यम होती थी। इस परंपरा के पुनर्जीवन हेतु समाज, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1.अधिकारी, टी. एन. (2023). गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में समावेशिता. ज्ञानज्योति, 3(1), 99—107।

2.मुकर्जी, आर. (1926). प्राचीन भारतीय शिक्षारू ब्राह्मणिक और बौद्ध परंपराएँ. मोतीलाल बनारसीदास, पृ. 40।

3.झा, वी. एन. (2007). प्राचीन भारत में संस्कृत शिक्षा. ओरिएंट ब्लैकस्वान, पृ. 81।

4.गोस्वामी, एस. (2021). प्राचीन शिक्षा व्यवस्था और आधुनिक चुनौतियाँ. साहित्य मंदिर, दिल्ली, पृ. 45—85

5.राठौर, एम. (2020). गुरुकुल प्रणाली और कौशल विकास. शिक्षा और समाज, 6(1), 33—49।

6.चौबे, स. प्र. (1998). भारत हेतु शिक्षा दर्शन. नोएडारू मयूर पेपर बैक्स, पृ. 38।

7.सुब्रमण्यन, एम. सी. (2012). गुरुकुलों में शैक्षणिक अभ्यास. भारतीय ऐतिहासिक समीक्षा, 35(2), 61।

8.रूहेला, स. (1992). भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र. जयपुररू राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ. 27।

9.सिन्हा, ए. के. (2015). गुरुकुल और ज्ञान संचरण में उनकी भूमिका. जर्नल ऑफ इंडियन फिलॉसफी, 48(3), 283।

10.लाल, अ. अ. (1989). सृजनशील जीवन और शिक्षा. नई दिल्ली, जे. बुक ट्रस्ट इंडिया, पृ. 18।

Cite this Article-

'डॉ0 राकेश कुमार सिंह; 'भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल परंपरा की प्रासंगिकता और वर्तमान शिक्षा में इसका पुनरुत्थान', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:03, March 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i3003

Published Date- 05 March 2025